

भारत के प्रमुख दर्दों के नाम उनके स्थान और महत्वपूर्ण तथ्यों की सूची

भारत के प्रमुख दर्दों:

दर्द किसे कहते हैं?

दर्द का अर्थ: पहाड़ियों एवं पर्वतिय क्षेत्रों में पाए जाने वाले आवागमन के प्राकृतिक मार्गों को दर्द कहा जाता है।

भारत में हिमालय पर कई खुबसूरत लेकिन परिवहन के लिए खतरनाक दर्द हैं। ये दर्द व्यापार, यात्रा, युद्ध और प्रवास में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के प्रमुख दर्दों की सूची:

- आफिल दर्द:** काराकोरम श्रेणी में K 2 के उत्तर लगभग 5306 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्द लद्दाख को चीन के झिंजियांग (सिकियांग) प्रान्त से जोड़ता है। शीत ऋतु में यह नवंबर से मई के प्रथम सप्ताह तक बंद रहता है।
- इमिस ला:** समुद्र तल से 5271 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्द लद्दाख को तिब्बत से जोड़ने का आसान रास्ता उपलब्ध कराता है। दुर्लभ भू-भाग और खड़ी ढाल वाला यह दर्द शीत ऋतु में बर्फ से ढक जाने के कारण बंद रहता है।
- काराताघ दर्द:** काराकोरम पर्वत श्रेणी में समुद्र तल से लगभग 5295 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्द प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा थी। शीतकाल में यह बर्फ से ढका रहता है।
- खारदुंग ला:** समुद्र तल से 5602 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्द से का परिवहन योग्य भारत और संभवतः दुनिया का सबसे ऊँचा दर्द है। परन्तु इसकी यह ऊँचाई विवादित भी है। लद्दाख क्षेत्र में लेह के पास स्थित यह दर्द श्योक और नुब्रा घाटियों जोड़ता है।
- खुञ्जेराब दर्द:** समुद्र तल से 4,693 मीटर की ऊँचाई पर स्थित काराकोरम श्रेणी का यह दर्द लद्दाख और चीन के सिक्यांग प्रान्त को जोड़ने वाल परंपरागत दर्द है। यह चीन के झिंजियांग क्षेत्र के दक्षिण पश्चिमी सीमा पर और पाकिस्तान के गिलगित-बाल्टिस्तान की उत्तरी सीमा पर, एक सामरिक स्थिति में काराकोरम पर्वत पर स्थित है। शीत काल में यह बर्फ से ढका रहता है।
- चंशल दर्द:** यह दर्द हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में दोदरा क्षार और रोहडू को जोड़ता है। यह शिमला की सबसे ऊँची पर्वत चोटी पर 4520 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।
- चांग ला:** समुद्र तल से 5360 मीटर की ऊँचाई पर स्थित महान हिमालय का यह दर्द लद्दाख को तिब्बत से जोड़ता है। यह दर्द लेह से पांगोंग झील को जाने वाले रस्ते में पड़ता है। जो तिब्बत के एक छोटे से शहर तांगस्ते से जोड़ता है। इसका नाम इस दर्द में स्थित चांग-ला बाबा के मंदिर के नाम पर किया गया है। बर्फ से ढक जाने के कारण शीत ऋतु में यह बंद रहता है। यह दुनिया का तीसरा सबसे ऊँचा परिवहन योग्य दर्द है, जो सिन्धु घाटी को पांगोंग झील के क्षेत्र से जोड़ता है।
- जेलेप ला:** जेलेप ला दर्द 4,270 मीटर की ऊँचाई पर पूर्वी सिक्किम जिले में स्थित है। यह दर्द सिक्किम को ल्हासा से जोड़ता है। यह चुम्बी घाटी में स्थित है।
- जोजी ला:** समुद्र तल से 3528 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्द श्रीनगर को कारगिल और लेह से जोड़ता है। अत्यधिक बर्फबारी के कारण यह शीतकाल में बंद रहता है। सीमा सड़क संगठन द्वारा इसे वर्ष की अधिकतर अवधि तक खोले रखने की कोशिश की जाती रही है। इसकी देखभाल और इस पर से बर्फ हटाने के लिए इस संगठन द्वारा एक बीकॉन फोर्स स्थापना भी की गयी है।
- ट्रेल्स दर्द:** यह उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ और बागेश्वर जिलों में समुद्र तल से 5212 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। नंदा देवी और नंदा कोट चोटियों के बीच स्थित है। पिंडारी हिमनद के कगार पर स्थित यह दर्द पिंडारी घाटी को मिलाम घाटी से जोड़ता है। खड़ी ढाल और विषम सतह के कारण इस दर्द को पर करना काफी कठिन है।
- डिफू दर्द:** यह दर्द 4587 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित यह दर्द इस राज्य को मंडाले (म्यांमार) तक का आसान और सबसे छोटा रास्ता (दिहांग की तुलना में) उपलब्ध कराता है। यह भारत और म्यांमार के बीच का एक परंपरागत दर्द है, जो व्यापार और परिवहन के लिए वर्ष भर खुला रहता है।
- थांग ला (लद्दाख):** समुद्र तल से लगभग 5,328 मीटर की ऊँचाई पर लद्दाख क्षेत्र में यह दर्द स्थित है, खारदुंग ला के बाद परिवहन योग्य यह भारत का दूसरा सबसे ऊँचा दर्द है।

- **दिहांग दर्दा:** यह दर्दा अरुणाचल प्रदेश राज्य में समुद्र तल से लगभग 1220 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह अरुणांचल प्रदेश को मंडले (म्यांमार) से जोड़ता है।
- **देब्सा दर्दा:** समुद्र तल से 5360 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह हिमांचल प्रदेश के कुल्लू और स्पीति जिलों के मध्य यह दर्दा महान हिमालय पर स्थित है। कुल्लू और स्पीति को जोड़ने वाले पिन-परवती दर्दा की तुलना में यह एक असान और कम दूरी का विकल्प है। सुंदर स्पीति घाटी हिमालय के पहाड़ों में हिमाचल प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में तिब्बत और भारत के बीच एक रेगिस्तानी पहाड़ भूमि है। यह दर्दा कुल्लू में पार्वती नदी घाटी से होकर गुजरता है।
- **नाथू ला:** यह भारत चीन सीमा पर तिब्बत क्षेत्र को सिक्किम से जोड़ता है। समुद्र तल से लगभग 4,310 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा है। यह भारत और चीन के बीच खुले तीन व्यापारिक मार्गों में से एक है, अन्य दो हिमांचल प्रदेश में स्थित शिपकी-ला और उत्तराखण्ड में स्थित लिपुलेख हैं। भारत चीन युद्ध (1962) के पश्चात् इस वर्ष 2006 में पहली बार खोला गया था।
- **निति दर्दा:** समुद्र तल से 5068 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है। शीतकाल में यह बर्फ से ढके होने के कारण नवंबर से मध्य मई तक बंद रहता है। **धौलीगंगा नदी** उत्तराखण्ड के चमोली जिले में निति दर्दा से 5,070 मीटर (16,630 फीट) की ऊँचाई से निकलती है।
- **पांगसान दर्दा:** समुद्र तल से 4000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा अरुणाचल प्रदेश को मंडले (म्यांमार) से जोड़ता है।
- **पीर-पंजाल दर्दा:** जम्मू को श्रीनगर से जोड़ने वाला यह पारंपरिक दर्दा 'मुगल रोड' पर स्थित है। पीर की गली के नाम से विख्यात यह मुगल सड़क के माध्यम से राजौरी और पुँछ के साथ कश्मीर घाटी को जोड़ता है। जम्मू कश्मीर को घाटी से जोड़ने वाला यह सबसे सरल और छोटा एवं पक्का मार्ग है। पीर की गली में मुगल रोड का उच्चतम बिंदु है 11500 फुट के लगभग है। यहाँ का निकटम शहर सोपियां है, जिसे सेबों की घाटी भी कहते हैं।
- **पेंजी ला:** जोजी ला दर्दे के पूरब में, समुद्र तल से 4,400 मीटर की ऊँचाई पर स्थित महान हिमालय का यह दर्दा कश्मीर घाटी को कारगिल (लद्दाख) से जोड़ता है। इसे जांस्कर के लिए प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। यह जांस्कर घाटी क्षेत्र को सुरु घाटी क्षेत्र से जोड़ता है शीतकाल में यह बर्फ से ढके होने के कारण नवंबर से मध्य मई तक आवागमन के लिए बंद रहता है। प्रसिद्ध रंगदुम मठ यहाँ से लगभग 25 किमी दूर है।
- **बनिहाल दर्दा:** समुद्र तल से 2832 मीटर की ऊँचाई पर पीरपंजाल श्रेणी में स्थित यह दर्दा जम्मू को श्रीनगर से जोड़ता है। शीत ऋतु में यह बर्फ से ढका रहता है। वर्ष पर्यन्त सड़क परिवहन की व्यवस्था करने के उद्देश्य से यहाँ जवाहर टनल (पंडित जवाहर लाल नेहरू के नाम पर) बने गयी, जिसका उद्घाटन 1956 में किया गया। जिसके कारण इस दर्दे का बहुत उपयोग नहीं रह गया।
- **बार लाप्चा:** जम्मू कश्मीर में समुद्र तल से 4890 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह मनाली को लेह से जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। शीत ऋतु में नवंबर से मध्य मई तक यह बर्फ से ढके होने के कारण आवागमन के लिये बंद रहता है। यह जास्कर श्रेणी का सबसे ऊँचा दर्दा है।
- **बुर्जिल दर्दा:** समुद्र तल बुरज़िल दर्दा 4,100 मीटर की ऊँचाई पर कश्मीर, गिलगित और श्रीनगर के बीच का एक प्राचीनमार्ग है। यह दर्दा कश्मीर घटी को लद्दाख के देवसार्वी मैदानों से जोड़ता है। यह भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा पर स्थित है।
- **बोमाडी ला:** भूटान के पूरब में अरुणाचल प्रदेश में मैं स्थित यह दर्दा समुद्र तल से 2217 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत की राजधानी ल्हासा से जोड़ता है।
- **बोरासु दर्दा:** बोरासु दर्दा चीन के साथ सीमा के पास 5,450 मीटर की ऊँचाई पर महान हिमालय पर्वत में स्थित है। यह उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश को जोड़ता है। उच्च ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा अद्भुत दून घाटी और किन्नौर घाटी के बीच एक पुराना व्यापार मार्ग था।
- **मंगशा धूरा दर्दा:** समुद्र तल से लगभग 5674 मीटर की ऊँचाई पर पिथौरागढ़ स्थित यह दर्दा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है। मानसरोवर की यात्रा लिए यात्रियों को इस दर्दे से भी गुजरना पड़ता है। पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों के लिए भूस्खलन एक बड़ी समस्या है।
- **माना दर्दा:** समुद्र तल से लगभग 5545 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है। इसे दुनिया की सबसे ऊँची परिवहन योग्य सड़क भी माना जाता है। शीतकाल में यह लगभग 6 महीने बर्फ से ढका रहता है। यह उत्तराखण्ड में हिंदू तीर्थ ब्रदीनाथ से 27 किमी दूर उत्तर में स्थित है।
- **मुनिंग ला:** गंगोत्री के उत्तर स्थित यह एक मौसमी दर्दा है, जो उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है। शीतकाल में यह बर्फ से ढका रहता है तथा यहाँ से कोई आवागमन संभव नहीं होता है।

- **रुपिन दर्दा:** उत्तराखण्ड में रुपिन नदी के पार स्थित यह दर्दा उत्तराखण्ड में धौला से शुरू होता है और हिमाचल प्रदेश में सांगला में खत्म होता है। निर्जन रुपिन दर्दा महान हिमालय पर्वतमाला में 4650 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और इस दर्दे में गहरी अंधेरी घाटियों, बर्फीले ढलानों और क्षेत्रों से होकर गुजरना पड़ता है।
- **रोहतांग दर्दा:** समुद्र तल से लगभग 3,978 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा हिमांचल प्रदेश की कुल्लू, लाहुल, एवं स्पीति घाटियों को जोड़ता है। प्रसिद्ध रोहतांग दर्दा महान हिमालय की पीर पंजाल रेज में स्थित है। सीमा सड़क संगठन यहाँ एक उच्च कोटि के सड़क मार्ग की वयवस्था की गयी है। सैनिक वाहनों, बसों, ट्रकों एवं अन्य मालवाहकों के भरी आवागमन के कारण इस पर ट्रांफिक जाम एक आम समस्या है। यह मई से नवंबर तक खुला रोहतांग दर्दा बाकी समय बर्फीले तूफानों और हिमस्खलन के कारण इसको पार करना मुश्किल है।
- **लनक ला:** अक्साई चिन (लद्धाख) में 5466 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा लद्धाख को ल्हासा से जोड़ता है। चीन ने यहाँ एक सड़क का निर्माण किया है। जो उसके सिक्यांग प्रान्त को तिब्बत से जोड़ती है। अक्साई चिन क्षेत्र के दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर है।
- **लिखापनी:** अरुणाचल प्रदेश में 4000 मीटर से अधिक ऊँचाई पर स्थित इस दर्दे द्वारा इस राज्य को म्यांमार से जोड़ा जाता है। व्यापार एवं यातायात के लिए यह वर्ष पर्यन्त काम करने वाला दर्दा है।
- **लिपु लेख:** घिघौरागढ़ में स्थित यह दर्दा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है। 5,334 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा तिब्बत में पुरंग को उत्तराखण्ड के कुमाऊं क्षेत्र से जोड़ता है। कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील के तीर्थयात्री दर्दे इस से होकर जाते हैं। यह भारत के चीन से होने वाले व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **शिपकी ला:** समुद्र तल से 4300 मीटर से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्दा, सतलज महाखड़ु से होकर हिमांचल प्रदेश को तिब्बत से सम्बद्ध करता है। यह हिमाचल प्रदेश में किन्नौर जिले में स्थित है। तिब्बत से आने वाली सतलज नदी इसी दर्दे से भारत में प्रवेश करती है। भारत के चीन से होने वाले व्यापार के लिए यह तीसरा (नाथु ला और लिपुलेख के बाद) दर्दा (राजमार्ग 22) है। शीतकाल में यह बर्फ से ढका रहता है।
- **सेला दर्दा:** जमा हुआ सेला दर्दा अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले में 4,170 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सेला दर्दा में सर्दियों में भारी बर्फबारी होती है, लेकिन यह साल भरखुला रहता है। यह तेजपुर और गुवाहाटी के माध्यम से तवांग को भारत से जोड़ता है। यह तवांग और प्रसिद्ध बौद्ध तवांग मठ का प्रवेश द्वारा है।